VERBETERINGEN OP ARISTOPHANES.

(ED. DINDORF, Poetae Scenici Graeci, 1830).

De meeste der hieronder opgegevene verbeteringen zijn althans in eenen beperkten kring reeds bekend; diegenen, die zonder naam worden opgegeven, zijn van auteurs die om verschillende redenen wenschen onbekend te blijven. Dit geschiedt, om eene zoo veel mogelijk volledige verzameling te geven van 't geen over ARISTOPHANES meestal verspreid bekend raakt; om geenerlei plagiaat te begaan onthouden wij ons streng van het motiveren der hier voorgestelde lezingen. Wij hebben evenwel ditmaal ons werk er van gemaakt, met de lezingen van hss. en uitgaven naauwkeurig bekend te zijn, en geven dan ook hier bij iedere plaats *alle* ons bekende lezingen van onderstaande hss. en de afwijkende der opgegeven uitgaven; eveneens hebben wij zorg gedragen geene gissingen op te nemen die reeds door de bedoelde uitgaven bekend zijn; een en ander niet zoozeer, omdat wij zelven dit zoo noodzakelijk achten, als om te voldoen aan de welligt overdreven eischen van enkelen [1].

[1]) Vergeleken zijn de volgende uitgaven: Poetae Scenici Graeci, Ed. G. DINDORF, Ed. secunda; Oxford, Parker, 1851, 4°. — ARISTOPHANIS Comoediae, ed. P. INVERNITZ, Voll. XIII; Leipz., Weidmann, 1794—1834. 8°. — A. C. rec. I. BEKKER, Voll. V; London en Cambridge, 1829. 8°. — A. C. ex nova rec. G. DINDORF; Parijs, Didot, 1838. 8°. mai. — Voorts Metra Aesch., Soph., Eur. et A., descripta a G. DINDORF; Oxf. 1843. 8°. — Obss. Criticae in Auctores Vett. Gr. scr. N. I. B. KAPPEYNE V. D. COPPELLO; Nymegen, Vieweg, 1850, 8°.; en de edities die bij elk stuk worden opgegeven. De verkortingen voor de uitgaven blijken van zelf. R. is het hs. te Ravenna (een perkamenths. uit de bibliotheek te Classis bij Ravenna, uit de *tiende*

ΕΙΡΗΝΗ[2].

Vs. 1. Οἰκ. α'. Αἶρ', αἶρε μᾶζαν ὡς τάχιστα κανθάρῳ.
Aangehaald bij Suid. op αἴρειν en μᾶζα, Bekk. Anecd. I. bl. 358. 6, Zonaras I. 93, Eust. op Hom. bl. 1734, 11, Orion Theb. Et. XX. 21, welke laatste αἶρ' αἶρε μάζαν heeft. — L. ὡς τάχος τῷ κανθάρῳ, vgl. Lysistr. 1187.K.

20 vlg. Οἰκ. β'. ὑμῶν δέ γ' εἴ τις οἶδ' ἐμοὶ κατειπάτω
πόθεν ἂν πριαίμην ῥῖνα μὴ τετρημένην.
L. ὁπόθεν πριαίμην. C.

47. Οἰκ. β'. δοκέω μὲν, ἐς Κλέωνα τοῦτ' αἰνίττεται.
ὡς Suidas op αἰνίττεται. — L. αἰνίσσεται. C.

98. Τρυγ. τοῖς ἀνθρώποις τε φράσον σιγᾶν.
τ' ἀνθρώποις Rd., ἀνθρώποις Rbi., terwijl Bekker en Invernitz τ' ἀνθρώποισι hebben, zoo als ook Didot en PS. (Poetae Scenici 1851). — L. τ' ἀνθρώποις φράζω. C. Vgl. evenwel Wolken 444 en Df. (Dindorf 1820) h. t. p.

138. Τρυγ. νῦν δ' ἅττ' ἂν αὐτὸς καταφάγω τὰ σιτία,
τούτοισι τοῖς αὐτοῖσι τοῦτον χορτάσω.
L. καταφάγω 'γὼ. σ. C.

153. Τρυγ. κάτω κάρα ῥίψας με βουκολήσεται.
κατωκάρα δὲ ῥ. Suid. op κατωκάρα, uitg. van Aldus en te Milaan. — L. βαυκαλήσεται. A. H. (Dr. A. Hecker).

155 vlgg. Τρυγ. ἀλλ' ἄγε, Πήγασε, χώρει χαίρων,
χρυσοχάλινον πάταγον ψαλίων
διακινήσας φαιδροῖς ὠσίν.

---

ceuw, vgl. INVERNITZ I. bl. VII—XII, en het facsimile van vs. 1001—1013 uit den Vrede en 1—5 uit den Plutos tegenover bl. 598; of volgens BEKKER I. bl. V—VII uit de *elfde* eeuw, in fol.), V. dat te Venetie (Marc. 474, een perkamenths. van de *elfde* eeuw, BEKKER t. a. p.), de letters b. i. achter deze verkortingen wijzen op de collaties van BEKKER en INVERNITZ als getuigen voor die lezing, p. achter V. op een afschrift van Prof. COBETS collatie van den Venetus. BEKKER, die 't gevoelen van INVERNITZ over den ouderdom van den Ravennas voor geheel verwerpelijk verklaart, klaagt ook in 't algemeen over die collatie, en Prof. COBET, die den Ravennas niet heeft gezien, over BEKKERS vergelijking van den Venetus.

[2]) A. Pax, e rec. G. DINDORF; Leipz. Weidm. 1820, 8o. — Rd. en Vd, zijn de Ravennas en Venetus volgens deze uitgaaf.

Aangh. bij Suidas op ψαλίοις. — L. χρυσοχάλινος. v. D. — En χαίρων, Πήγασε, χώρει, vgl. Kikkers 1500. K.

161. Τρυγ. ὀρθῶς χώρει Διὸς εἰς αὐλάς.

ἐς Rb. en Inv., χώρει Vp. — L. ὀρθὸς χ. met Vdp. — C.

175. Τρυγ. ἤδη στρεφεῖ τι πνεῦμα περὶ τὸν ὀμφαλόν.

γρ καὶ πρᾶγμα rc (latere hand?) Vb., πνεῦμα. γρ καὶ πρᾶγμα Vp. — L. στρέφει. C.

213. Ἑρμ. νὴ τὴν Ἀθηνᾶν, νὴ Δί', οὐχὶ πειστέον.

πιςέον Vp. Rb. — L. ὦνδρες.

232 vlg. Ἑρμ. ἀλλ' εἶμι· καὶ γὰρ ἐξιέναι, γνώμην ἐμὴν
μέλλει· θορυβεῖ γοῦν ἔνδοθεν.

ἔνδοθεν Rbdi. — L. γνώμην γ' ἐμήν, vgl. Eccl. 153. v. H. (H. van Herwerden, Litt. Cand. te Leyden).

234 vlgg. Τρυγ. φέρ' αὐτὸν ἀποδρῶ· καὶ γὰρ ὥσπερ ᾐσθόμην
κἀυτὸς θυείας φθέγμα πολεμιστηρίας.

L. ὡς σύ περ. C.

257. Τρυγ. ὡς δριμύς.
Κυδ. οἴμοι μοι τάλας, ὦ δέσποτα.

μοι ontbreekt Rb. Vb.; Rd. Vd., Bentley, Df., Bekk. geven het geheele vs. aan Κυδοιμός. — L. Τρυγ. ὡς δριμύς ἐστ'· Κυδ. οἴμοι τάλας, ὦ δ. C.

339 vlgg. Τρυγ. καὶ βοᾶτε, καὶ γελᾶτ'· ἤ-
δη γὰρ ἐξέσται τόθ' ὑμῖν
πλεῖν, μένειν, κινεῖν, καθεύδειν·

βινεῖν Vp., en zoo PS., βδεῖν H. (Vespp. bl. 190) voor πλεῖν. — L. πλημμελεῖν. v. H.

374. Τρυγ. ἐς χοιρίδιόν μοί νυν δάνεισον τρεῖς δραχμάς.

νῦν μοι δαν. Vp., νῦν Rb. — L. νύν μοι. C.

386 vlgg. Τρυγ. εἴ τι κεχαρισμένον
χοιρίδιον οἶσθα παρ' ἐ-
μοῦ γε κατεδηδοκώς.

γε ontbreekt Rbdi. Vp. — L. ἔμοιγε. C. En vereenig de beide laatste verzen, met Bekker en Didot.

439. Χορ. μὰ Δί' ἀλλ' ἐν εἰρήνῃ διάξειν τὸν βίον.

Aangh. bij Suidas op σκαλεύειν: voorts διάγειν Rbd. — L. διαγαγεῖν. C.

497 vlg. Τρυγ. ὑμεῖς μέν γ' οὖν οἱ κιττῶντες
τῆς εἰρήνης σπᾶτ' ἀνδρείως.

μὲν οὖν Bekk., Inv., Df. — L. μέν νυν C., γ' is door Bentley ingevoegd.

548. Τρυγ. ὁ δὲ δρεπανουργὸς οὐχ ὁρᾷς ὡς ἥδεται.
L. τὸν δὲ δρεπανουργόν. C.

589 vlg. Χορ. πᾶσιν ὁπόσοι βίον ἐ-
τρίβομεν γεωργικόν.
γεωργικὸν βίον ἐτρίβομεν in één vs. Bekk., Inv. en zoo moet gelezen worden, maar γεωργόν. C.

617 vlg. Χορ. οὐδ' ἔγωγε, πλήν γε νυνί. ταῦτ' ἄρ' εὐπρόσωπος ἦν
οὖσα συγγενὴς ἐκείνου. πολλά γ' ἡμᾶς λανθάνει.
L. πόλλ' ἄρ' ἡμᾶς. C.

621 vlg. Ἑρμ. πάντ' ἐμηχανῶντ' ἐφ' ὑμῶν, τοὺς φόρους φοβούμεναι
κἀνέπειθον τῶν Λακώνων τοὺς μεγίστους χρήμασιν.
L. κᾆθ' ἔπειθον. C.

679. Ἑρμ. ἔτι νῦν ἄκουσον οἷον ἄρτι μ' ἤρετο.
L. ἔτι νυν. C.

720. Τρυγ. ὦ κάνθαρ', οἴκαδ' οἴκαδ' ἀποπετώμεθα.
L. οἴκαδ' αὖθις. C.

746 vlg. Χορ. ὦ κακόδαιμον, τί τὸ δέρμ' ἔπαθες; μῶν ὑστριχὶς εἰσέβαλέν σοι
εἰς τὰς πλευρὰς πολλῇ στρατιᾷ κἀδενδροτόμησε τὸ νῶτον.
κἀδενδροτόμησεν Vp., τὸν Rbdi. Vbpd. en Suidas (uitg. Aldus) op ὑστριχίς, uitg. Mil. heeft τό. — L. κἀδενδροκόπησε. C.

800 vlg. Χορ. ὅταν ἠρινὰ μὲν φωνῇ χελιδὼν
ἑζομένη κελαδῇ, χορὸν δὲ μὴ 'χῃ Μόρσιμος.
κελαδεῖ Vp., ἠρινὰ Rdi. — L. ἑζομένη 'πὶ κλαδί. v. H.

851 vlg. Οἰκ. ἄγε νυν ἴωμεν. εἰπέ μοι, δῶ καταφαγεῖν
ταύτῃ τι;
ἄγε νῦν Vp. — L. ταύτῃ τί; C.

931 vlgg. Χορ. ἐπίτηδες οὖν, ἵν' ἐν τἠκκλησίᾳ
ὡς χρὴ πολεμεῖν λέγων τις οἱ καθήμενοι
ὑπὸ τοῦ δέους λέγωσ' Ἰωνικῶς ὄϊ.
Vs. 931 volgens Elmsley op de Acharners, bl. 105 (Leipz.); verschillende gissingen staan bij Df. h. t. p.; λέγει Rb., ἐπίτηδές γ' ἵν' ἐν τῇ 'κκλησίᾳ Ri., ἐπίτηδέσγ' ἵν' ἐν τἠκκλη-

σία ⁘ en λέγητις Vp. — L. εἰν (εἰ ἐν) en met Brunck λέγοι. G. (Prof. J. Geel).

960. Τρυγ. σείου σὺ ταχέως· σὺ δὲ πρόπινε τῶν ὀλῶν.
L. σεῖ' οὖν. C.

973. Τρυγ. ἀλλ' ὡς τάχιστ' εὐχώμεθ', εὐχώμεσθα δή.
De beide laatste woorden zijn van een ander spreker. C.

1114. Τρυγ. οὐ γὰρ ποιήσεις λεῖον τὸν τραχὺν ἐχῖνον.
ποήσεις Rb. — L. hier en vs. 1081 τρηχύν. C.

1255. Δορ. οἴμ' ὦ κρανοποί', ὡς ἀθλίως πεπράγαμεν.
L. κρανοπῶλ', ὡς. v. D.

'ΟΡΝΙΘΕΣ[3].

2. Πισθ. διαρραγείης· ἥδε δ' αὖ κρώζει πάλιν.
L. ἡ δεδί. C. — Πισθέταιρος voor Πεισθέταιρος met Kappeyne; reeds Göthe, die »Treufreund" vertaalt, schijnt deze lezing gekend te hebben.

11. Πισθ. οὐδ' ἂν μὰ Δία γ' ἐντεῦθεν 'Εξηκεστίδης.
L. μὰ Δί' ἔν γε τεῦθεν. C.

15 vlg. Εὐελπ. ὃς τώδ' ἔφασκε νῷν φράσειν τὸν Τηρέα
[τὸν ἔποφ', ὃς ὄρνις ἐγένετ', ἐκ τῶν ὀρνέων].
νὼ Rb. — Vs. 16 is onecht. C.

23. Εὐελπ. ἥδ' ἡ κορώνη τῆς ὁδοῦ [τί] λέγει πέρι;
ἤδ' ἡ κορώνη Ri., ἦδ' Rb. — L. τί δ' ἡ., verder moet τί vóór λέγει vervallen. C.

25 vlg. Πισθ. τί δ' ἄλλο γ', ἢ
βρύκουσ' ἀπέδεσθαί φησί μου τοὺς δακτύλους.
Aangh. bij Suidas op βρύκουσα, waar de Milaansche uitgaaf μοι φησί heeft, βρύκουσ' — ἐσθίουσα Ri., ἀπέδεσθαι Inv. zonder tweede accent. — L. μοι. C. En τί ἄλλο.

---

3) A. Aves, rec. C. D. BECK; Leipz. 1782. 8°. — U. is een hs. »Vaticano-»Urbinas," door ZACAGNI voor KUSTER vergeleken, bij INV. IX. I. bl. XV en 432 vlg., IVoss. en KVoss. een hs. op katoenpapier, op de Leydsche bibliotheek aanwezig, volgens de collatie welke INV. t. a. p. meêdeelt, en die van KIEHL, de laatste met de uitgave van TAUCHNITZ (1829) thans weder met het hs. vergeleken, dit laatste, Voss. Var. Form. 33 (204) vroeger 191, is in folio, en uit de *veertiende* eeuw afkomstig, het bevat de Vogels van vs. 1492 af, in twee kolommen van 18 regels ieder, met scholien en glossen, welke door DIDOT reeds zijn uitgegeven.

32. Εὐελπ. ὁ μὲν γὰρ ὢν οὐκ ἀστὸς, εἰσβιάζεται.
L. οὐκ ὤν. C.
35. Εὐελπ. ἀνεπτόμεσθ' ἐκ τῆς πατρίδος ἀμφοῖν ποδοῖν.
Aangh. bij Suidas op ἀμφοῖν, die ἀνιπτάμεθ' heeft, maar zie Porson op Eurip. Med. 1. — L. ἀνεπτόμεθ', en ἀμφοῖν τοῖν ποδοῖν. C.
48. Εὐελπ. εἴ που τοιαύτην εἶδε πόλιν, ᾗ 'πέπτατο.
ᾗι πέπτατο Vp. — L. ᾗ 'πέπτετο, het tweede met Ri. en Dawes. M.
58. Πισθ. οὐκ ἀντὶ τοῦ παιδὸς σ' ἐχρῆν ἐποποῖ καλεῖν;
L. παῖ, παῖ. C.
79. Εὐελπ. τροχίλος ὄρνις οὑτοσί.
L. οὔρνις K. De vogel heet niet τροχίλος, maar wordt alleen spottenderwijs zoo genoemd, omdat hij telkens van τρέχειν spreekt. C. Een loopsche vogel.
103. Ἔποψ. ὄρνις ἔγωγε.
Εὐελπ. κᾆτά σοι ποῦ τὰ πτερά;
L. κᾆτα ποῦ σοι. C.
108. Ἔποψ. ποδαπὼ [τὸ γένος] δ';
Εὐελπ. ὅθεν αἱ τριήρεις αἱ καλαί.
L. ὅθενπερ, en τὸ γένος moet vervallen. C. Vgl. Df. bij Inv. IX. I. 180.
127. Ἔποψ. ποίαν τιν' οὖν ἥδιστ' ἂν οἰκοῖτ' ἂν πόλιν;
L. οἰκοίτην. C.
128. Εὐελπ. ὅπου τὰ μέγιστα πράγματ' εἴη τοιαδί.
τοιαδί Ri. — τοιαδὶ Vb., τοιάδε Vp. — L. μοι ταδί. C.
134. Εὐελπ. μή μοι τότε γ' ἔλθῃς, ὅταν ἐγὼ πράττω κακῶς.
L. ποτ' ἔλθῃς uit Suidas op μή μοί ποτ' ἔλθῃς. C.
172. Ἔποψ. τί [ἂν] οὖν ποιοῖμεν;
Πισθ. οἰκίσατε μίαν πόλιν.
οἰκήσατε Rb. — L. ποιῶμεν, gelijk vóór Brunck werd uitgegeven, ἂν moet vervallen. C.
217 vlgg. Ἔποψ. ἵν' ὁ χρυσοκόμας Φοῖβος ἀκούων
τοῖς σοῖς ἐλέγοις ἀντιψάλλων
ἐλεφαντόδετον φόρμιγγα, θεῶν
ἵστησι χορούς.
L. σοῖς τ' ἐλέγοις. M.

236. Ἔποψ ... ἡδομένᾳ φωνᾷ·
ἡδομέναι Vb., ἁδομένᾳ φ. Vp.
L. ἁδομένᾳ. C. Zoo ook bij Eurip. Hyps. V. 3 Df., aangh. bij Plut. Moral. bl. 93 d. 664 f.

297 vlg. Πισθ. οὑτοσὶ πέρδιξ, ἐκεινοσὶ δὲ νὴ Δί' ἀτταγᾶς,
οὑτοσὶ δὲ πηνέλοψ, ἐκεινοσὶ δέ γ' ἀλκυών.
ἐκεινοσί γε νὴ Δί' ἀλκυών Ri., νὴ δὶ (voor δέ γ') Rb. — L. ἐκεινηὶ δέ γ' ἀλκυών. K.

336 vlg. Χορ. ἀλλὰ πρὸς τοῦτον μὲν ἡμῖν ἐστιν ὕστερος λόγος·
τὼ δὲ πρεσβύτα δοκεῖ μοι τώδε δοῦναι τὴν δίκην.
L. νῦν. C.

347 vlg. Χορ. ὡς δεῖ τώδ' οἰμώζειν ἄμφω
καὶ δοῦναι ῥύγχει φορβάν.
L. ῥάμφει, volgens den lateren scholiast h. t. p. (Didot): γράφεται καὶ ῥάμφει. ὅπερ βέλτιον. ῥάμφος γάρ ἐπὶ ὀρνέου. ἐπὶ δὲ χοίρου ῥύγχος. Op dezelfde wijs verbetere men vss. 364. 479. 672. 1138. 1155, vgl. echter Triller en Oudendorp op Thomas Magister bl. 787. K.

371. Ἔποψ. εἰ δὲ τὴν φύσιν μὲν ἐχθροὶ, τὸν δὲ νοῦν εἰσιν φίλοι.
εἰσὶ φίλοι Vp. — L. οἱ δέ. C.

381 vlg. Χορ. ἐστὶ μὲν λόγων ἀκοῦσαι πρῶτον, ὡς ἡμῖν δοκεῖ,
χρήσιμον· μάθοι γὰρ ἄν τις κἀπὸ τῶν ἐχθρῶν σοφόν.
Aangh. bij Suidas op μαθόν. — και (voor κἀπό) Rb. — L. μάθοις γὰρ ἄν τι. C.

353 vlg. Χορ. τάχα γὰρ τύχοις ἂν
χρηστὸν ἐξειπὼν ὅτι μοι παρορᾷς, ἢ κτέ.
L. ἐξευρὼν en met Bentley παροραῖτῇ. M.

461. Χορ. λέγε θαρρήσας· ὡς τὰς σπονδὰς οὐ μὴ πρότερον παραβῶμεν.
L. πρότεροι. K.

465. Πισθ. μὰ Δί', ἀλλὰ λέγειν ζητῶ τι πάλαι μέγα, καὶ λαρινὸν ἔπος τι.
L. τρίπαλαι. C.

586. Πισθ. ἢν δ' ἡγῶνται σὲ θεὸν, σὲ βίον, σὲ δὲ Γῆν, σὲ Κρόνον, σὲ Ποσειδῶ κτέ.

σὲ δὲ κρ. σὲ δὲ ποσ. Vp. — L. σεμνόν σε θεὸν (σεμνον voor σειιον). M.

593 vlg. Πισθ. τὰ μέταλλ' αὐτοῖς μαντευομένοις οὗτοι δώσουσι τὰ χρηστά,
τάς τ' ἐμπορίας τὰς κερδαλέας πρὸς τὸν μάντιν κατεροῦσιν.

τὰ μέταλλα σοῖς μαντευομένοις Ri., μέταλλα τοῖς Rb. Vp. κατεροῦσι Rb. — L. μὲν ἀλλ' α. en τὰς δ' ἐμπορίας. C.

604. Πισθ. ἣν εὖ πράττωσ', οὐχ ὑγιεία μεγάλη τοῦτ' ἐ-
υ στί; σάφ' ἴσθι κτέ.

ὑγίεια Vp.) maar het teeken υ is doorgeschrapt). — L. ἄρ' οὐ μεγάλη τοῦτ' ἐσθ' ὑγίεια. C. Vgl. Cob. op 729 vlgg. bij Kapp. bl. 29.

610. Εὐελπ. αἰβοῖ, ὡς πολλῷ κρείττους οὗτοι τοῦ Διὸς ἡμῖν βασιλεύειν.

βαβαί· Inv. zonder opgaaf uit den Rav. — L. βαβαῖ. C.

701. Χορ. ξυμμιγνυμένων δ' ἑτέρων ἑτέροις, γένετ' οὐρανὸς ὠκεανός τε.

δ' wegg. Rb. ἐγένετ' Rb. Vb. — L. γέγον' οὐρανός. K.

722. Χορ. ἆρ' οὐ φανερῶς ἡμεῖς ὑμῖν ἐσμὲν μαντεῖος Ἀπόλλων;
L: ἐσμὲν ὁ μαντεῖος. C.

847. Πισθ. οὐδὲν γὰρ ἄνευ σοῦ τῶνδ' ἃ λέγω πεπράξεται.
L. σοῦ γ' ὧν λέγω. C.

909 vlg. Ποιητ. Μουσάων θεράπων ὀτρηρὸς
[κατὰ τὸν Ὅμηρον].

Hier en vs. 914 moet κατὰ τὸν Ὅμηρον wegvallen. Daarop ziet ook waarschijnlijk het anders onverklaarbare schol. Rav. 913 (Didot): περισσὰ τινὲς ταῦτα, zonder lemma. K.

975. Χρησμ. καὶ φιάλην δοῦναι, καὶ σπλάγχνων χεῖρ' ἐπιπλῆσαι.

»975 sq. suppl. in m. m. pr." Vp. — L. ἐνιπλῆσαι. C.

977. Χρησμ. κἂν μέν, θέσπιε κοῦρε, ποιῇς ταῦθ' ὡς ἐπιτέλλω κτέ.

ποεῖς Rb. — L. κῆν μέν, en ποιήσῃς. C.

1017 vlg. Πισθ. νὴ Δί', ὡς οὐκ οἶδ' ἄρ' εἰ
φθαίης· ἂν ἐπίκεινται γὰρ ἐγγὺς αὐταιί.

ΠΕΙΣΘ. om. Rb., γὰρ ἄν: νὴ δί' ὡσ οὐκ οἶδ' Vp. — L. ἂν en ἔτ' voor ἄρ' en ἄν. C.

1036. Πισθ. τουτὶ τί ἐστιν αὖ κακὸν τὸ βιβλίον;
βύβλίον Rb. Vp. — L. κακόν; τί τὸ β. C.
1040. Ψηφ. χρῆσθαι Νεφελοκοκκυγιᾶς τοῖσδε τοῖς μέτροισι καὶ σταθμοῖσι κτἑ.
τοίοισδε Bentl. — L. τοῖς αὐτοῖς. C.
1052. Ἐπισθ. ἀπολῶ σε, καὶ γράφω σε μυρίας δραχμάς.
L. γράψω. M.
1076 vlgg. Χορ. βουλόμεσθ' οὖν νῦν ἀνειπεῖν ταῦτα χἠμεῖς ἐνθάδε.
ἢν ἀποκτείνῃ τις ὑμῶν Φιλοκράτη τὸν Στρούθιον
λήψεται τάλαντον· ἢν δὲ ζῶντά γ' ἀγάγῃ, τέτ-
θ ταρα.
βουλόμεθ' οὖν Vp., »μηθεως pr R., ubi στρου. in mg." (voor Στρούθιον) Rb., Φιλοκράτην U. en Suid. op Φιλοκράτης; ζῶντα ἀγάγηι Vp., ζῶντ' αὐτόν Suid. t. a. p. — L. βουλόμεσθά νυν, en ζῶντ' ἄγῃ τις. C.
1196. Χορ. ἄθρει δὲ πᾶς κύκλῳ σκοπῶν * *
Er ontbreekt ⏑-⏑-. — L. ἁπανταχῇ. C.
1225 vlg. Πισθ. δεινότατα γάρ τοι πεισόμεσθ' ἐμοὶ δοκεῖ, εἰ τῶν μὲν ἄλλων ἄρχομεν κτἑ.
μοι Rb., γάρ μοι πεισ. Vp. — L. δοκεῖν en ἄρξομεν. C.
1228. Πισθ. ἀκροατέον ὑμῖν ἐν μέρει τῶν κρειττόνων.
L. ἀκροατέ' ὑμῖν. C.
1265 vlg. Χορ. μηδέ τιν' ἱερόθυτον ἀνὰ δάπεδον ἔτι τῇδε βροτὸν θεοῖσι πέμπειν καπνόν.
βροτῶν Rb. Vb., τ. βροτῶν θ. πέμπειν καπνόν Vp. — L. βροτῶν. C.
1313 vlg. Χορ. ταχὺ δ' ἂν πολυάνορα τὰν πόλιν καλοῖ τις ἀνθρώπων.
καλεῖ Rbi. (zonder ἂν in vs. 1314 Inv.), Vp. — L. ταχὺ δὴ π. en καλεῖ. C. En τάνδε met Bekker en Invernitz.
1347 vlg. Πατρ. πάντων· μάλιστα δ' ὅτι καλὸν νομίζεται
ε τὸν πατέρα τοῖς ὄρνισιν ἄγχειν καὶ δάκνειν.
νομίζεται Rb., τοῖσιν Rbi, ὄρνισι Vp. — L. νομίζετε. C.
1358 vlg. Πατρ. ἀπέλαυσά τἄρ' ἂν νὴ Δί' ἐλθὼν ἐνθαδὶ εἴπερ γέ μοι καὶ τὸν πατέρα βοσκητέον.
ἀπέλαυσα γὰρ ἂν νὴ Δί' Ri., ἀπέλασα Vb. — L. ἀπέλαυσά

γ' ἄ,ρα νή. C. — L. ἀπέλαυσα τί ἄρα νή, en plaats een vraagteeken achter βοσκητέον. v. H.

1437 vlg. Συκ. καὶ πῶς ἂν λόγοις
ἄνδρα πτερώσειας σύ;
Πισθ. πάντες τοῖς λόγοις
ἀναπτεροῦνται.

ἄνδρας Vb. — L. τοι. C.

1445. Πισθ. ἀνεπτερῶσθαι καὶ πεποτῆσθαι τὰς φρένας.
L. κἀπτοῆσθαι. C.

1506. Προμ. ἀπὸ γάρ ὀλεῖ μ', εἴ μ' ἐνθάδ' ὁ Ζεὺς ὄψεται.
γάρ μ' ὀλέσει Rbi., γὰρ ὀλέσει U. (bij Pors.) Vb., γὰρ ὀλέσει εἴ μ' KVoss., ὀλέσει IVoss., ὀλέσει Kuster, ὀλέσει μ' Bentl., ὀλεῖς Pors. — L. ὄλωλ' εἰ. C.

1538. Προμ. ἥπερ ταμιεύει τὸν κεραυνὸν τοῦ Διός.
τοῦ KVoss. — L. τὸν Διός. C.

1543. Προμ. ἥν γ' ἢν σὺ παρ' ἐκείνου παραλάβῃς, πάντ' ἔχεις.
ἥ῎ν γὴ῎ν σῦ KVoss., παραλάβῃς, πάντ' ἔχεις Ri., ἅπαντ' Rb., παν῎τ' KVoss., λάβησ KVoss. — L. τήνδ' ἢν σύ. C.

1553 vlgg. Χορ. πρὸς δὲ τοῖς Σκιάποσιν λί-
μνη τις ἔστ' ἄλουτος οὗ
ψυχαγωγεῖ Σωκράτης.

Σκιάποσι Inv., Σκιάποσιν Bentl. om de maat, ἔς' ἄλουτοσ. οὗ KVoss. — L. ἔστ' ἄνυδρος, οὗ als parodie van eene thans onbekende plaats. K.

1585 vlg. Ἡρακλ. εἶτα δῆτα σιλφίου
ἐπικνᾷς πρότερον αὐτοῖσιν;

ἐπικνα῀σ KVoss. — L. ἐπικνῇς. C.

1616. Πισθ. ὁρᾷς; ἐπαινεῖ χοὖτος. ἕτερον νῦν ἔτι | ἀκούσαθ' κτέ.
ν῀ῦν KVoss. — L. νυν. C.

1651 vlg. Ἡρακλ. ἐγὼ νόθος; τί λέγεις;
Πισθ. σὺ μέντοι, νὴ Δία
ὤν γε ξένης γυναικός.

ὤν. γε ξένης KVoss. — L. ὢν γ' ἐκ ξένης. C.

1681. Ποσ. εἰ μὴ βατίζειν, ὥσπερ αἱ χελιδόνες.
βαδίζειν Rb. Vb., εἰ μὴ βαδίζοι γ' ὥσπερ αἱ χελιδόνες Ri., βαδίζειν et gl. ὀρνιθιάζειν IVoss., βαδῖζειν met de gl. εἰ μὴ ὀρνιθιάζειν KVoss. βαδίζει γ' Didot, βατίζει γ' PS. — L. βαΰζει γ' ὥ. C.

1709 vlgg. Ἄγγ. προσέρχεται γὰρ, οἷος οὔτε παμφαὴς
ἀστὴρ ἰδεῖν ἔλαμψε χρυσαυγεῖ δόμῳ.

ἔλαμψεν ἰδεῖν Rbi., Vp., KVoss., ἔλ. ἰδ IVoss, δομ., KVoss. — L. δρόμῳ. K.

1721 vlgg. Χορ. περιπέτεσθε
μάκαρα μάκαρι σὺν τύχᾳ.
ὦ φεῦ φεῦ τῆς ὥρας [τοῦ κάλλους].

τὸν μάκαρα μάκαρϊ met de glossa μακαρι KVoss., τοῦ κάλλους KVoss. — L. μακαίρᾳ, en τοῦ κάλλους moet vervallen. C.

ΛΥΣΙΣΤΡΑΤΗ [4].

15 vlg. Καλον. ἀλλ' ὦ φιλτάτη
ἥξουσι· χαλεπή τοι γυναικῶν ἔξοδος

χαλεπή τε Ri., τε Rb., τοι Brunck uit hss. γῦναικῶν ἔξοδος KVoss. — L. ἥξοδος met Brunck en Dawes en γυναιξίν. G.

24. Λυσ. [καὶ] νὴ Δία ταχύ.
Καλον. κᾆτα πῶς οὐχ ἥκομεν;

καὶ (supplevit m. s. ut videtur) νὴ δία ταχύ· καλ. κᾶτα PVoss. καὶ νὴ δία ταχῦ. καλ. κᾶτα (et ita semper) πῶς οὐχ' ἥκομεν KVoss., νὴ τὸν Δία Brunck uit hss.; Καὶ νὴ Δὶ Didot. — L. νὴ Δία τάχιστον, dan moet καί vervallen. C.

42. Καλον. τί δ' ἂν γυναῖκες φρόνιμον ἐργασαίατο;

---

[4]) A. Lysistrata cum scholiis, e recensione R. ENGER; Bonn, H. B. König, 1844. — Dit stuk staat niet in den Venetus, even min als de Acharners. — PVoss. en KVoss. beteekenen de collaties van Dr. PLUYGERS en van KIEHL (de eerste met BEKKERS uitgaaf, de tweede met TAUCHN. 1829, weder met het hs. vergeleken) van hs. Voss. Fol. 52 (77), 't welk de Lysistrata — vs. 1034 ing. bevat en een vervolg schijnt van hs. Voss. der Vogels. Van vs. 357 af aan is het van eene andere hand; vss. 62—131, 200—267, 820—889 (ingesl.) ontbreken, zonder aanwijzing van den copist; dit zijn telkens 68—70 vss., en het hs. is dus overgeschreven naar een codex, dat op elke bl. 34—35 vss. bevatte en waarvan drie bladen verloren waren, want in den Voss. zijn alle drie gapingen in 't midden van de bladzijden. Deze zijn in twee kolommen geschreven, en elke kolom bevat 19 vss.

ἐργασαίατο KVoss., *ἐργασαίμεθα* Grotius op Clem. Al. Paed. III. bl. 254, 20 (Pott.). — L. *ἐργασαίμεθ' ἄν*; vgl. vs. 253. N.

66. *Καλ. αἱ δ' αὖθ' ἕτεραι χωροῦσί τινες. ἰοὺ ἰού.*
αἵδί θ' ἕτεραι Enger en Dobree, maar deze leest *δ' ἕτ.* — L. *αἱ δ' ἕτεραι αὖ.* G.

83 vlg. *Λυσ. ὡς δὴ καλὸν τὸ χρῆμα τιτθίων ἔχεις.*
Λαμπ. ἅπερ ἱερεῖόν τοι μ' ὑποψαλάσσετε.
τῶν τιτθίων Ri., *χρῆμα τῶν τιτθ.* Rb., *αἵπερ* Rb. — L. *καλόν τι*, en *ὑποψαλάδδετε*, 't laatste met Suid. op *ψαλάσσετε.* C.

86 vlg. *Λαμπ. πρέσβειρά τοι ναὶ τῷ σιὼ Βοιωτία*
ἵκει ποθ' ὑμέ.
L. *ἀμέ.* Ha.

117. *Λαμπ. ἐγὼ δὲ καί κα ποττὸ Ταΰγετόν γ' ἄνω | ἔλσοιμ' κτἑ.*
L. *δέ κα καὶ π.* C.

130. *Καλ. μὰ Δί' οὐδ' ἐγὼ γάρ, ἀλλ' ὁ πόλεμος ἑρπέτω.*
ἔγωγ' ἄρ' Inv. volgens Brunck. — L. *ἔγωγ' ἄν.* v. H.

152. *Λυσ. στύοιντ' ἂν ἄνδρες κἀπιθυμοῖεν πλεκοῦν.*
ἄνδρεσ PKVoss., Bothe, Enger, *ϛῦοιντ' ἂν* KVoss., *σπλεκοῦν* PS., Didot. — L. *στύοιντο δ' ἄνδρες* G., het eerste reeds bij Bothe en Enger.

176. *Λυσ. καταληψόμεθα γὰρ τὴν ἀκρόπολιν τήμερον.*
καταληψόμεσθα vóór Brunck, *κταληψόμεσθα γὰρ τὴν ἀκρόπολϊν* KVoss. — L. *καταληψόμεσθα τὴν πόλιν γὰρ τ.* C.

179. *Λυσ. θύειν δοκούσαις καταλαβεῖν τὴν ἀκρόπολιν.*
eveneens KVoss. — L. *τὴν πόλιν καταλαμβάνειν.* C.

216. *Καλ. ὑπολύεταί μου τὰ γόνατ', ὦ Λυσιστράτη.*
L. *μοι.* C.

285. *Χορ. Γερ. μὴ νῦν ἔτ' ἐν τετραπόλει τοὐμὸν τροπαῖον εἴη.*
τετραπόλει » libri omnes Inv.", *ἐνγέτεραπολει* »R. i. e. *ἔν γ' ἑτέρᾳ πόλει*" Bekk., *μὴ νῦν ἔτ' ἐν τετραπόλει τοῦμὸν τρόπαιον* KVoss., *τοῦμὸν* PVoss., *τετραπτόλει* PS., Didot. — L. *μή νυν.* C.

376. *Χορ. Γερ. οὐκ οἶδά σ' εἰ τῇδ' ὡς ἔχω τῇ λαμπάδι σταθεύσω.*
οἶδας Inv., *οὐκ οἶδα σ' εἰ τῆδ' ὡσ ἔχω τῆ λαμπάδϊ ϛαθεύσων*

KVoss., ϛαθευσων PVoss. — L. οὐκ οἶδ' ἂν, εἴ σε τῇδ' ἐγὼ τ. λ. στ. C.

380. Χορ. Γερ. σχήσω σ' ἐγὼ τῆς νῦν βοῆς.
Χορ. Γυν. ἀλλ' οὐκ ἔθ' ἡλιάξεις.

ἡλιάξεις Inv. Bekk., ἡλιάξει Didot, PS., Buttmann, ἡλιάζεις Bentl., ἀλλ' οὐκέτ' KVoss. ἡλϊάζεισ of ἡλϊάξεισ PKVoss. — L. ἡλιάζει. C.

428 vlgg. Προβ. οὐχ ὑποβαλόντες τοὺς μόχλους ὑπὸ τὰς πύλας ἐντεῦθεν ἐκμοχλεύσετ', ἐνθενδὶ δ' ἐγὼ ξυνεκμοχλεύσω.

ἀλλ' οὐχ' ὑποβ. (ἀλλ' deletum est) PKVoss., 'ϋποβαλοντεσ KVoss., ἐντεῦθεν ἐκμοχλεύσετ KVoss., ἐνθένδε γ' ἐγὼ Rbi. behalve ἐγώ Rb., ἐνθένδε δ' ἐγὼ PVoss., ἐνθένδε δ' ἐγὼ KVoss. — L. ἐντευθενί 'κμοχλεύσετ', ἐ. v. H.

514. Λυσ. .... τί δέ σοι ταῦτ'; ἢ δ' ὃς ἂν ἀνήρ.

τί δέ σοι τοῦτο ἢ δ' ὣσ 'ἀνήρ; l. s. τοῦτ' ἦδ' (aut ἧδ') ὡσ ἀνήρ: - PVoss., τί δέ σοι τοῦτο, ἢ δ' ὃς ἀνὴρ KVoss, ταῦτ' Ri., ἀνὴρ Ri., ἀνήρ Rb. — L. τί δὲ σοὶ τ. C.

653. Χορ. Γυν. τὸν ἔρανον τὸν λεγόμενον παππῷον ἐκ τῶν Μηδικῶν.

ͅ λεγόμενον π. ἐκ KVoss., παππῶον PKVoss., ἐπὶ τ. Μ. Suid. op Μηδικῶν, maar ἐκ τ. Μ. op παππῷον. — L. γενόμενον. G.

657. Χορ. Γυν. τῷδέ γ' ἀψήκτῳ πατάξω τῷ κοθόρνῳ τὴν γνάθον.

τῷδε γ' ἀψ. PVoss., τῷδε γ' ἀψήκτω de ι subscr. misschien van de 2e h. KVoss., τῷδε σ' ἀψήκτῳ Dobree, τ (ῷ) KVoss. — L. τἀψήκτῳ, en σοι. C.

740 vlg. Λυσ. μὴ μἀποδείρῃς. ἢν γὰρ ἄρξῃ τουτουὶ ἑτέρα γυνὴ ταυτὸν ποιεῖν βουλήσεται.

ἀποδείρῃς Rb., ἀποδείρησ PVoss., μή. μὴ ἀποδείρησ KVoss, ἄρξῃ τοῦτο σῦ, KVoss., ἄρξῃ τούτου Ri., τούτου Rb., ἡ 'τέρα (σε) PKVoss., γ. τ. π. βουλήσεται PVoss., βουλῆται, maar η veranderd, het was eerst ε, en schijnt dus βούλεται aan te duiden, met verandering in βουλήσεται; onder de σ is het acc. van βούλεται nog zigtbaar KVoss., μὴ μὴ 'ποδείρῃς Inv. Bekk., τούτου σύ Inv., τοῦτο σὺ Bekk. — L. ἄρξῃς τοῦδε σύ. C.

785. Χορ. Γερ. ἦν νεανίσκος Μελανίων τις ὃς κτἑ.
ἦν νεανῖσκος KVoss., μειλανίων Rbi., KVoss., τῖς KPVoss. ἦν ποτε νέος Didot. — L. μειράκιον ἦν, vgl. de antistr., v. 809. K.

842 vlg. Λυσ. καὶ μὴν ἐγὼ
συνηπεροπεύσω παραμένουσά γ' ἐνθαδί.
παραμένουσ' Rb., περιμένουσά γ' Dobree. — L. σοι παραμένουσ' ἐ.

865 vlg. Κιν. ὡς οὐδεμίαν ἔχω γε τῷ βίῳ χάριν,
ἐξ οὕπερ αὐτὴ 'ξῆλθεν ἐκ τῆς οἰκίας·
ξυνῆλθεν »omnes libri" Inv., αὕτη ξυνῆλθεν Rb. — L. ἐγῷδα, en αὕτη 'ξῆλθεν. C.

898. Κιν. τὰ τῆς 'Αφροδίτης ἱέρ' ἀνοργίαστά σοι.
Aangh. bij Suid. op ἀνοργίαστα. — ἀφροδῖτης 'ἱὲρ' KVoss. — L. 'Αφροδίτης δ' ἱέρ' ἀ. C.

931. Μυρρ. τὸ στρόφιον ἤδη λύομαι. μέμνησο νῦν·
ἤδη λῦομαι μέμνη̃σο KVoss. — L. ἠδὴκδύομαι. C.

974 vlg. Χορ. Γερ. μεγάλῳ τύφῳ [καὶ πρηστῆρι
ξυστρέψας καὶ] ξυγγογγυλίσας κτἑ.
τῦφῶ, »ω e corr." spr. scr. μέγαλω καύσωνϊ a. m. quae glossas scr.; ω van τῦφῶ was oorspr. λω of δω KVoss., en ξϋςρέψασ καὶ ξϋγγογϋλῖσας. KPVoss. — L.
μεγάλῳ τύφῳ ξυγγογγύλας. C.

1087. 'Αθην. ὡς ἄνδρες ἡμεῖς οὑτοιὶ τοιουτοιί.
L. ἄνδρες. C.

1101 vlg. 'Αθην. ἐπὶ τί πάρεστε δεῦρο;
Λάκ. περὶ διαλλαγᾶν
πρέσβεις.
'Αθην. καλῶς δὴ λέγετε· χἠμεῖς τουτογί.
ταυταγί Bentley. — L. γ' οὑτοιί. C.

1165. 'Αθην. μὰ τὸν Ποσειδῶ, τοῦτο μέν γ' οὐ δράσετε.
ποσιδᾶ Rb. — L. δράσομεν. C.

1263. Χορ. Λακ. μόλε δεῦρο, παρσένε σιὰ κτἑ.
σιᾶ Rb. — L. σεία. C.
